रोशनी की लकीर

अमरनाथ शुक्ल

रोशनी की लकीर

उपन्यास

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नयी दिल्ली-110002

रोशनी की लकीर

अमरनाथ शुक्ल

प्रकाशक :
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नयी दिल्ली-110 002

© भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
पहला संस्करण 1991 : मूल्य : 4.50

मुद्रक :
त्यागी प्रिंटिंग प्रेस
त्रिलोकपुरी
दिल्ली-110091

प्रकाशकीय

प्रौढ़ शिक्षा में नवसाक्षरों के लिए साहित्य का अभाव सदैव रहा है। भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ विभिन्न अभिकरणों के रचनात्मक सहयोग से ऐसे साहित्य के निर्माण एवं प्रकाशन की दिशा में अग्रणी रहा है। समय-समय पर प्रयोजन से आयोजित लेखक कार्यशालाओं में से विगत कार्यशाला में प्रस्तुत पुस्तक की रचना संभव हो पायी।

विद्वान् एवं अनुभवी लेखक श्री अमरनाथ शुक्ल की ग्रामीण विकास, स्वास्थ्य रक्षा और परिवार कल्याण कार्यक्रम को रेखांकित करने वाली पुस्तक 'रोशनी की लकीर' आपके हाथों में है।

इस रोचक पुस्तक को आप केवल लाभप्रद ही नहीं वरन् जीवन के विभिन्न सोपानों से जुड़ा होने के कारण अत्यन्त ही उपयोगी पाएंगे।

रूबी किड फाउंडेशन, नई दिल्ली एवं एशियन सउाथ पैसिफिक ब्यूरो आफ एडल्ट एजूकेशन के सहयोग से ही यह प्रकाशन संभव हो पाया है। इस हेतु हम सभी के कृतज्ञ हैं।

—कैलाश चौधरी
महासचिव, भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
प्रबन्ध न्यासी, रूबी किड फाउंडेशन

रोशनी की लकीर

रोशनी की लकीर

अनुराधा ने अपनी डाक्टरी की पढ़ाई पूरी कर ली। उसकी पहली नौकरी राहतपुर ब्लाक के ग्रामीण हस्पताल में लगी। उसे बड़ी खुशी हुई। अपनी पढ़ाई के समय वह कभी कभी अपने मां बाप के साथ छुट्टियों में गांव जाया करती थी। गांव की औरतों तथा उनके बच्चों की हालत देखकर उसे बड़ा दुःख होता था।

वह देखती थी कि एक औरत के चार-चार, छह-छह बच्चे। किसी की कोई देखभाल नहीं। मरियल, बीमार, पेट निकले हुए नंग-धड़ंग घूमते रहते हैं। सब भगवान भरोसे पल रहे हैं। बीमार बच्चों की दवा की बजाय

नजर-टोने को झाड़-फूंक की जाती है। खाने को पूरा नहीं मिलता, गंदगी में खेलते रहते हैं। पढ़ने-लिखने स्कूल जाने का कोई मतलब ही नहीं। बड़े बच्चे मां की गोद के बच्चे को खिलाते रहते हैं। माएं घर और खेती के काम में जुटी रहती हैं। बच्चा भूख के मारे जोर जोर से रोये तो छाती से लगा लिया, पर उन सूखी छातियों में इतना दूध कहां कि बच्चे का पेट भरे!

औरतों की हालत यह कि उनकी घर गृहस्थी में कोई कदर नहीं। बच्चे पैदा करें, खाना बनाएं, घर तथा खेती के काम में मर्दों के बराबर काम करें, फिर भी उनकी हैसियत कुछ नहीं। उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य होता था कि जिस काम के लिए आदमी को मजदूरी में एक सेर अनाज मिलता था, उसी काम के लिए औरत को आधा सेर अनाज मिलता था। उसने जब अपनी मां से पूछा कि "एक ही जैसे काम के लिए जिसे औरत पूरा करती है, उसे आधी मजदूरी क्यों दी जाती है?"

मां ने बताया कि "बेटा ऐसा ही चलता है, औरत को कमजोर समझा जाता है। वह आदमी जितना काम नहीं कर सकती, ऐसा मान कर उसे आधी मजदूरी दी जाती है। औरत इसके खिलाफ बोले तो कल से काम मिलना बंद। भले आधी मजदूरी मिल रही है, पर बच्चों का पेट भरने के लिए उसे काम तो मिल रहा है, इसलिए इस कम मजदूरी से उसे कोई शिकायत भी नहीं।"

अनुराधा बोली—"मां, यह तो औरतों के साथ

भेदभाव और जुल्म है। ऐसा नहीं होना चाहिए।

मां ने कहा—"बेटी, ऐसा तू इसलिए सोचती है कि तू पढ़ी लिखी है, क्या उचित है, क्या अनुचित है यह तू सोच विचार सकती है, पर ये अनपढ़ औरतें अपनी जिंदगी में यह सब सोच भी नहीं सकती।"

"हां मां मैं देख रही हूं कि बिना शिक्षा के शिकवा शिकायत और भाग्य भरोसे ये अपनी जिन्दगी बिता रही हैं, साथ ही अपने बच्चों को भी इसी हालत में इसी तरह जीने के लिए छोड़ रही हैं। अब तो गांवों में स्कूल खुल गए हैं। रात्रि पाठशालायें लगती हैं। किताब कापी मुफ्त मिलती है। पढ़ाई की कोई फीस नहीं, फिर ये अपने बच्चों को स्कूल क्यों नहीं भेजती ?"

मां ने हंस कर कहा—"बड़ी लड़कियां मां के छोटे बच्चों को खिलाती बहलाती रहती हैं ताकि मां घर और खेत मजदूरी का काम कर सके। थोड़े बड़े बच्चे ढोर डंगर चराते रहते हैं। ऐसे ही वक्त बीत जाता है।"

अनुराधा को यह सब जान सुनकर बड़ा दुःख हुआ था। अब उसे इस बात की खुशी हुई कि अब गांव में अपनी नौकरी के दौरान इन औरतों की हालत सुधारने के लिए उससे जितना हो सकेगा अवश्य करेगी। जब भारत अंग्रेजों के आधीन था, तब ऐसे अवसर नहीं थे, इसी तरह की जिन्दगी जीने की उनकी मजबूरी थी, पर स्वतन्त्र भारत में जब ग्रामीण विकास की इतनी योजनायें चल

रही हैं, परिवार नियोजन का महत्व बढ़ रहा है, सब को मुफ्त शिक्षा का प्रबन्ध है, रोजगार के साधन दिए जा रहे हैं। तब ये सब क्यों इस तरह अंधेरे की जिन्दगी जियें ?

उसे लगा कि इसकी जड़ में एक बड़ी बात है अज्ञानता, निरक्षरता। जब तक ये सब थोड़ा बहुत पढ़ना लिखना न सीखेंगी तब तक ये नए अवसर से लाभ उठाना भी नहीं सीखेंगी और न ही अपने घर परिवार के भविष्य को इस अंधेरे से निकाल पायेंगी।

उसे यह सब सोच देखकर बड़ा दुःख हुआ कि जिस देश की आबादी की आधी संख्या औरतों की हो, तथा आबादी के 100 पीछे 70 आदमी गांवों में बसते हों वहां अगर यह परिवर्तन न आया तो वही हालत होगी कि "अंधा बांटे और पाड़ा खाय"!—सरकार विकास योजनाओं की रस्सी बंटती जायेगी और देश की बढ़ती बीमार-अनपढ़ लोगों की आबादी का पाड़ा उसे चबा जायेगा। विकास योजनाओं के चाहे जितने घड़े भरते जायं, पर जब 100 घड़ों में से 50 घड़ों का पानी निकल ही जायेगा तो बाकी 50 घड़े इस देश के विकास की प्यास कैसे बुझायेंगे ?

अनुराधा के दिमाग में ये सवाल जोर से उभरे। एक दिन वह गांव के सरपंच चौधरी धनसिंह से मिली और बताया कि आपके गांव के चिकित्सा केन्द्र में डाक्टर होकर आई हूं।

सरपंच ने उसे पहली बार देखा तो उसे लगा कि अपने स्वभाव तथा बोलचाल से अपने गांव की ही बेटी लग रही है। उसने कहा—"बेटी बैठो, यह तो बड़ी खुशी की बात है कि तुम जैसी डाक्टरनी हमारे बीच आई। पर यह तो बताओ कि इस देहात में जहां शहरी चमक-दमक नहीं है, शहर की सुविधा नहीं है, हम अनपढ़ों के बीच कुछ दिन रहोगी या किसी तरह यहां ये पिंड छुड़ाने के लिए शहर के हस्पताल में बदली कराने के लिए जोड़ तोड़ करने लगोगी ?"

अनुराधा हंस कर बोली—"बाबा, आप ऐसा क्यों सोचते हैं ? मैं तो खुश हूं कि मेरी पहली नौकरी ग्रामीण हस्पताल में लगी। शहर की चमक दमक से ज्यादा मुझे गांव के लोगों का भोलापन तथा अपनापन अच्छा लगता है, पर स्वतन्त्र भारत में गांवों के लोगों की, खासकर औरतों और बच्चों की दशा देखकर बड़ा दुख होता है कि कहीं कोई बदलाव नहीं आया। रहने-सहने, रीति-रिवाजों, पढ़ने-पढ़ाने तथा बच्चों के पालन पोषण और देखभाल का वही पुराना ढर्रा चला आ रहा है और इस बात की वजह यह है कि उनको इस बात की जानकारी नहीं होती कि वे भी अपने घर परिवार गांव तथा देश की तरक्की में आधे हिस्सेदार

हैं। उनके बच्चे देश का भविष्य हैं तथा उन बच्चों का भविष्य उनके हाथों में है, जिसकी तरफ उन्हें पूरा ध्यान देना है।

इसके लिए उन्हें खुद आगे आना होगा। उन्हें पढ़ना लिखना सीखना होगा, नई बातें जाननी होंगी। अपने खाली समय को बिताने के लिए ऐसे काम सीखने होंगे जो घर बैठे परिवार की आमदनी में बढ़ोतरी करें। घर परिवार में उनकी क्या हैसियत है, आजाद भारत में उनके क्या अधिकार हैं, यह उन्हें जानना होगा। अपने बच्चों के पालन पोषण तथा स्वस्थ रखने के तौर तरीके जानने होंगे। उनकी पढ़ाई के लिए जोर देना होगा। छोटा परिवार सुख का आधार—यह उन्हें खुद ही समझना होगा।"

सरपंच अनुराधा की बातें सुन टोंककर बोला—"बेटी, तू तो डाक्टरनी है। तुझे तो इतना करना है कि जो बीमार चिकित्सा केन्द्र में आये उसे देखे और दवा दे। ये किस लम्बे चौड़े काम के बारे में सोच रही है?"

अनुराधा हंस कर बोली—"बाबा, जो डाक्टर रोगी को देखकर दवा देकर छुट्टी पा लेता है, वह ठीक नहीं करता। देखना यह चाहिए कि वह बीमार किस वजह से हुआ? बीमारी की जड़ क्या है? जब डाक्टर यह देखता है तो रोगी को दवा देने के साथ साथ उसे बीमार होने की वजह बताता है तथा उनसे दूर रहने की सलाह देता है। नतीजा यह होता है कि इस तरह की वजह से

जो बीमारियां होती हैं, सावधानी बरतने से लोग बहुत कम बीमार होंगे। इससे रोग की जड़ पकड़ी जाती है। मैं चाहती हूं कि लोग जानें कि उनके बच्चों को एक जैसी बीमारियां क्यों हो जाती हैं ? जल्दी जल्दी अधिक बच्चे होने से जच्चा बच्चा दोनों ही कमजोर तथा कई तरह की बीमारियों के कैसे शिकार हो जाते हैं। इस सब के बारे में उन्हें सही सलाह दी जाय, बीमारी तथा बुराइयों से बचने के उपाय बताये जायं तो बच्चे बहुत कम बीमार हों। इसलिए उन्हें समय का खाना कब दिया जाए, यह सब समझाया जाय तब कुछ होगा।"

सरपंच ने कहा—"बेटी, तुम तो पहली डाक्टरनी आयी हो जो ऐसा सोचती हो। हमें सलाह देने वाले, हमारे बीच काम करने वाले जब तक हमारे अपने बन कर हमारे बीच काम नहीं करेंगे, तब तक हम कैसे उन्हें अपना मान कर उनकी सलाह मानेंगे ? सरपंच की हैसियत से जो मदद चाहिए, मैं तैयार हूं। दुनिया में कौन ऐसा आदमी है जो अपनी भलाई की बात न माने और न सुने। बाबा तुलसीदास ने भी लिखा है–"हित अनहित पशु पच्छिहुं जाना", जब पशु पक्षी अपनी भलाई को ताड़ जाते हैं, तो हम तो मनुष्य हैं। बता मुझे क्या करना होगा ?"

अनुराधा बोली, "ज्यादा कुछ नहीं बाबा। सुबह शाम मरीजों को देखने और दवा देने के बाद मेरा काफी समय खाली रहता है। कभी कभी जब मैं कहूं तब आप गांव की

औरतों बच्चों को पंचायत घर में बुला लिया करना। मैं उनसे बातें करूंगी। कुछ अपनी कहूंगी कुछ उनकी सुनूंगी। इसी बहाने उन्हें बहुत जानने समझने का मौका मिलेगा।"

सरपंच बोले—"भली कही। नेकी और पूछ कर! तू कहे तो रोज सब आ जाया करें।"

अनुराधा ने टोंकते हुए कहा—"नहीं बाबा! रोज रोज में कठिनाई है। ये औरतें ही सोचने लगेंगी कि इस डाक्टरनी को तो कोई काम नहीं, रोज रोज पंचायत बैठाकर उपदेश देने लगती है। इसीलिए रोज रोज आने से ऊब जायेंगी और मेरी बात उन्हें अपने भले की न लगकर उबाऊ भाषण लगेगा। मजा तो तब है जब वह खुद जानने और समझने का मन बनायें। इसलिए मैं खुद ही मौका देखकर आपको बता दिया करूंगी। अब चलती हूं।"—कहकर अनुराधा चली गई।

सरपंच उसे जाते हुए तब तक देखता रहा जब तक वह आंख से ओझल न हो गई।

चिकित्सा केन्द्र में आज बड़ी भीड़ थी, खास कर औरतों और बच्चों की। अधिकतर मरीज गर्भवती औरतें तथा उनके बच्चे थे। अनुराधा सब की बीमारी के बारे में ध्यान से सुनती, उन्हें कुछ बातें बताती और दवा की परची बना देती।

सत्तो की बारी आई। अनुराधा ने देखा कि वह पेट से भारी थी। गोद में साल सवा साल का बीमार सा बहुत कमजोर बच्चा था। उसकी धोती पकड़े दो ढाई साल की लड़की खड़ी थी।

"क्या तकलीफ है ?"—अनुराधा ने पूछा।

सत्तो बोली–"पेट में बहुत दर्द है। कई दिनों से खून भी जा रहा है।"

"तो अब तक क्यों नहीं आई ?"

"क्या करूं डाक्टरनी जी, इन बच्चों के मारे काम से ही फुरसत न मिले है। मेरे मरद को भी आज ही टैम मिला।"

"तुम्हारे गोद का बच्चा भी तो बीमार लगता है ?"

"हां इसे सूखा रोग हो गया है। इसके पेट में कुछ पचता हो नहीं। झाड़-फूंक करवा रही हूं।"

"यह बच्चा भी तेरा है ?"—अनुराधा ने साथ चिपके बच्चे की ओर देखकर पूछा।

"मेरा ही है, क्या करूं छोड़ता ही नहीं। हर समय

ऐसे ही साथ रिरियाता रहता है।" सत्तो उस बच्चे की ओर देखकर बोली।

अनुराधा ने कहा—"जब इतनी जल्दी जल्दी बच्चे होंगे तो यही होगा। एक भी तन्दुरुस्त नहीं रहेगा और तुम खुद अपनी हालत देखो, क्या हो गई हो। अभी तुम उधर चलकर बैठो। तुम्हें अच्छी तरह देखना होगा। और मरीजों को निबटा लूं तब तुम्हें तसल्ली से देखूंगी। अपने आदमी से कह दो वह भी बैठा रहे।"

सत्तो अपने आदमी को कह अन्दर एक तरफ बेंच पर बैठ गई। अनुराधा और मरीजों को देखने लगी। जब सब मरीज निबट गए तो उसने सत्तो को अन्दर ले जाकर चेकिंग की और कहा कि तुम्हारे पेट में बच्चा लगता है। रुकेगा नहीं। खून ज्यादा निकल गया है। दवा देती हूं, हो सकता है कि रुक जाए, पर उम्मीद कम है। तुम अपने आदमी को बुलाओ।"

सत्तो का आदमी भजन लाल बाहर खड़ा सब सुन रहा था। तुरन्त ही अन्दर आ गया। अनुराधा ने उससे कहा—"देखो, तुम्हारी औरत के गर्भ से काफी खून जा चुका है। इसी खून पानी से बच्चे का मां के गर्भ में विकास होता है। वैसे मैं दवा दे रही हूं। आराम हो जाये तो ठीक वर्ना सफाई करवानी पड़ेगी।"

भजनलाल ने कहा—"क्या कहा, सफाई करवानी पड़ेगी? कोई कूड़ा करकट है जो सफाई करवानी पड़ेगी? चल री सत्तो, हमें दवा-सवा नहीं लेनी। यह तो तेरा पेट

गिराना चाहे है। दवा मत खाइयो। आजकल डाक्टर डाक्टरनियां जिसके दो चार बच्चे देखे हैं उसी को गर्भ गिरवाने को, सफाई करवाने को, नसबंदी कराने को ज्यादा जोर देवें हैं।" यह कहता हुआ वह सत्तो को लेकर चला गया। डाक्टरनी को कुछ बोलने का मौका ही नहीं दिया।

अनुराधा ने इसका बुरा नहीं माना क्योंकि वह जानता थी कि जब तक इन लोगों को खुद इस बात का ज्ञान नहीं होगा कि किस बात में उनकी भलाई है तब तक यह सब सुनना ही पड़ेगा। इसलिए खासकर औरतों को यह समझाना होगा कि उनके अपने स्वास्थ्य के लिए, उनके बच्चों के स्वास्थ्य के लिए तथा परिवार की भलाई के लिए क्या करना होगा।

उसने सोचा, वह रोज थोड़े थोड़े समय के लिए गांव की औरतों से मिलेगी, उनके बीच बैठेगी, उनकी बातें सुनेगी तथा उनके मन में ऐसी बात जगाने की कोशिश करेगी कि वे खुद उन हालात से निकलने की सोचें।

औरतें परिवार की जड़ होती हैं। अगर जड़ें मजबूत हों, उसे अच्छी खाद पानी मिले तो परिवार रूपी पौधा अच्छी तरह फूले फलेगा।

दूसरे दिन उसने सरपंच को भजनलाल की पत्नी की हालत बताई तथा भजनलाल ने क्या कहा यह भी बताया। उसने कहा—यह एक बात नहीं है, ऐसी कितनी ही बातें हैं

जो इनकी जिन्दगी में बीमारी, गरीबी, छोटे बच्चों की अक्सर मौत तथा उनके शोषण का कारण बनी हैं। यह सब ऐसे दूर नहीं होंगी कि मुझ जैसे कुछ लोग आयें और कुछ बातें बताकर चले जाएं। सदियों से जड़ जमाएं हुये ये कमजोरियां, ये बुराइयां ये अंधविश्वास तभी दूर होंगे जब इनके मन में इस सब से छुटकारा पाने की चाह पैदा हो। ये खुद उन बुराइयों को महसूस करें और उनसे छुटकारा पाने के लिए आगे बढ़ें।

सरपंच ने कहा—"बेटी ! मेरे लायक जो काम हो बता, मैं करने को तैयार हूं।"

अनुराधा बोली—"बाबा। मैं ड्यूटी के बाद अपना डाक्टरी लबादा उतार कर गांव की औरतों के बीच अक्सर उठती बैठती हूं। उनकी जैसी बनकर उनका सुख दुख सुनती हूं। सब की अपनी अपनी परेशानियां हैं। कुछ से तो अलग अलग बातें करके मैंने उनमें हिम्मत जगाई, पर मैं चाहती हूं कि कभी कभी हम सब एक साथ बैठकर एक दूसरे की बातें सुनें, समझें, समझायें।"

सरपंच ने कहा—"मैं आज ही खबर कराये देता हूं। गांव की औरतें पंचायत भवन में आ जायेंगी। सब कोई साथ मिलो, बैठो, सीखो सिखाओ।"

अनुराधा आज बहुत खुश थी। अस्पताल का काम निपटा कर जब वह पंचायत भवन पहुंची तो उसने देखा कि गांव की वे सभी औरतें जिनसे वह मिलती रही है, आई हैं।

कुछ देर इधर-उधर की बातें होने के बाद अनुराधा ने कहना शुरू किया—"बहनो, मैं इस गांव में डाक्टर होकर जरूर आई हूं पर तुम सब से अलग नहीं हूं। तुम सब के बीच उठ बैठकर मुझे बड़ा सुख मिलता है, पर अपने इस आजाद देश में तुम सब को उसी पुराने हालत में देखकर दुख होता है।

इस देश की आबादी में आधा हिस्सा औरतों का है, पर इस देश को आगे बढ़ाने में औरतों का हाथ न के बराबर है। जिसको अपनी ही खबर नहीं, अपने बच्चों के भविष्य का कोई ध्यान नहीं, वे इस देश की उन्नति में भला कैसे सहायता दे सकती हैं ?

तुम सब की जो भी समस्यायें हैं, उसकी जड़ में एक ही बात है कि तुम सब अनपढ़ हो। चूंकि खुद पढ़ाई लिखाई की कदर नहीं जानती, इसलिए अपने बच्चों को भी पढ़ने पर जोर नहीं देती। कहा है कि—'बिना पढ़े नर पशु कहावे'। जैसे खेती में काम आने वाले जानवरों को साधना पड़ता है तब वे सही काम करने वाले बनते हैं। इसी तरह जब आदमी थोड़ा पढ़ता लिखता है तो उसके दिमाग की खिड़की खुल जाती और वह अपना हर काम

आगा-पीछा सोच विचार कर करता है तथा सोच विचार कर किये हुए काम का लाभ उसे मिलता है।

अब मैं तुम्हीं लोगों के बीच में से एक उदाहरण देती हूं। सत्तो की अभी शादी हुए कितने दिन हुए? चार साल में उसे तीसरा बच्चा होने को था। कम उम्र में तथा जल्दी जल्दी बच्चा पैदा होने से मां का स्वास्थ्य इतना गिर जाता है कि वह और बच्चे का भार नहीं संभाल सकती। जब इसमें ही ताकत न होगी तो वह पेट के बच्चे को कहां से ताकत देगी? यों समझो कि खेत से अच्छी पैदावार लेने के लिए खेत को कुछ दिनों तक परती छोड़ा जाता है। अगली फसल के लिए खेत को पूरी तरह से तैयार किया जाता है। यही हालत मां के गर्भ की भी होती है। एक बच्चे के जन्म से दूसरे बच्चे के जन्म में कम से कम चार पांच साल का अन्तर जरूर होना चाहिए। इससे गर्भवती मां तथा पेट का बच्चा दोनों स्वस्थ रहते हैं। इसके अतिरिक्त पहले बच्चे को मां का पूरा दूध मिलता है तथा उसके पालन पोषण पर पूरा ध्यान तथा समय मिलता है।

सत्तो को देखो, उसके दोनों बच्चे कितने कमजोर हैं, उनको कोई न कोई बीमारी आए दिन लगी रहती है। सत्तो भी कितनी कमजोर है। ऐसे में उसके पेट में एक बच्चा और आ गया। उसके आदमी भजनलाल ने मेरी राय नहीं मानी। नतीजा अब सबने देखा कि बच्चा पेट

में थका नहीं। सत्तो मरते मरते बची। उस कच्चे प्रसव में अगर सत्तो को कुछ हो जाता तो सोचो भजनलाल के दोनों बच्चों की क्या हालत होती? अगर सत्तो थोड़ी पढ़ी-लिखी होती तो वह मेरी सलाह मानने के लिए अपने आदमी पर जोर दे सकती थी।

बच्चे ज्यादा होंगे तो किसी की ठीक से देखभाल न हो सकेगी, सही ढंग से उनका पालन पोषण न हो सकेगा। कुपोषण तथा बीमारियों के कारण उनकी मौत का अंदेशा बराबर बना रहेगा। बड़े होने पर थोड़ी जमीन जायदाद में इतने हिस्सेदार हो जायेंगे कि उनमें से किसी परिवार का पेट नहीं भरेगा। फिर कोई शहर भागेगा, कोई मजदूरी करेगा। मतलब यह कि अगर भजनलाल आज किसान है तो इसके सब बच्चे किसान न होकर मजदूर बन जायेंगे।

कहा है—'बहु बंशे निरबंश'—ज्यादा संतान दुख का कारण बनती है। तुम लोगों को महाभारत की एक बात बताती हूं। कौरवों के राजा धृतराष्ट्र के एक सौ बेटे थे। इतने बच्चों की ठीक तरह से देखभाल तथा शिक्षा दीक्षा न होने से सब के सब उजड्ड, बदमाश, धूर्त तथा दूसरों की धन दौलत हड़प कर जाने की नीयत वाले थे। अपने चचेरे भाई पाण्डवों को उनका हक नहीं देना चाहते थे। नतीजा यह हुआ कि महाभारत हुआ और उस युद्ध में

धृतराष्ट्र के सारे बेटे मारे गए। अंधे मां बाप बुढ़ापे में उनके नाम पर रोने से बचे।

यह मत समझो कि बड़ा परिवार होने से वह ताकतवर बनेगा। वह आपस में ही लड़ मरेगा। परिवार बड़ा होते रहने से एक सीमित आमदनी पर बोझ पड़ता है और कमाई सबके लिए पूरी नहीं होती। गृहस्थी का बजट तथा हिसाब गड़बड़ा जाता है।

एक पटवारी जी थे। एक बार उनको अपने परिवार को लेकर नदी पार करनी थी। बोले, मैं पहले जाकर देखूं कि नदी में कितना पानी है, फिर सब कोई साथ चलना। पटवारी जी अपना लट्ठा लेकर नदी पार कर गए और वापस आकर पत्नी तथा बच्चों से बोले—"चलो, पानी ज्यादा नहीं है। आगे आगे पटवारी जी, पीछे उनकी पत्नी और बच्चे। जब पटवारी जी ने नदी पार की और पीछे मुड़कर देखा तो केवल वह और उनकी पत्नी थी। बच्चों का पता नहीं। पटवारी ने अपने लट्ठे पर पानी के निशान को देखा तो बोला—लेखा ज्यों का त्यों, कुनबा डूबा क्यों ?

वह भला आदमी यह न समझ सका कि हिसाब भले ही बराबर था पर वे बच्चे हिसाब में नहीं आ रहे थे। इसलिए परिवार का हिसाब आगा पीछा सोचकर अपनी आमदनी के अन्दर रखना चाहिए।"

औरतों के बीच बैठी बूढ़ी भगवन्ती बोली -"डागडरनी जी—आप कहो तो ठीक ही। नसबंदी वाले भी बहुत सीख देवे हैं कि बच्चे ज्यादा ना हों। पर अभी जो हैं, राम न करें हारी बीमारी में मर जायं तो वंश ही डूब जाए।"

अनुराधा बोली—"दादी ऐसा सोचना ठीक नहीं। बच्चे मरते ही इसलिए ज्यादा हैं कि जल्दी जल्दी बच्चे पैदा होने से माएं उनकी ठीक तरह से देखभाल नहीं कर पातीं। वे कुपोषण के शिकार रहते हैं। बीमारियों से बचाने के लिए उन्हें सही समय पर दवायें नहीं पिलाई जातीं, टीके नहीं लगवाये जाते। यों समझो कि अगर खेत की फसल को सही समय पर खाद पानी न दी जाय, रोगों से बचने के लिए दवाएं न छिड़की जायं, जंगली जानवरों द्वारा चर लिए जाने से न बचाया जाय तो नतीजा क्या होगा ? यही न कि खत्म हो जायेगी।

इसलिए अगर एक दो बच्चे ही होंगे तो मां बाप उनका पालन पोषण अच्छी तरह कर सकेंगे। मां का स्वास्थ्य ठीक रहेगा। परिवार की सम्पत्ति तथा जमीन छोटे छोटे टुकड़ों में नहीं बटेगी। बच्चे बड़े होकर खुशहाल रहेंगे तो अपने बूढ़े मां बाप की अच्छी तरह देखभाल करेंगे।

पर यह सब तब होगा जब आप सब खुद सोचो। हम

लोग तो तुम्हें अच्छी बातें बता ही सकती हैं— करना तो तुम लोगों को है।

सरकार ने ग्रामीण विकास की कितनी सुविधाएं दे रखी हैं पर फायदा तो तब उठाओ जब इसका पता हो। बच्चों को बीमारियों से बचाने के लिए मुफ्त दवायें तथा टीके लगवाये जाते हैं। बच्चों की पढ़ाई के लिए कोई फीस नहीं, किताब कापियां मुफ्त, दोपहर को दूध नाश्ता मुफ्त। रोजगार के लिए कर्ज। किसी एक जैसे काम के लिए मर्द और औरत को बराबर मजदूरी। औरतों का घर परिवार में पूरा हक। आगे बढ़ाने, आर्थिक हालत सुधारने, बीमारियों से बचने, खेती के साथ गांव में कोई छोटा मोटा धन्धा करने, दुधारू गाय भैंस के लिए रुपये आदि का इन्तजाम सब सरकार ने कर रखा है।

घर में बहुत सारी चीजें पड़ी हैं, पर अंधेरे में वह तब तक नहीं मिलती जब तक रोशनी न हो, इसी तरह आदमी को अपनी जिन्दगी का अंधेरा दूर करने के लिए शिक्षा के दीपक की जरूरत होती है। तुम लोग तो जैसे तैसे अपनी जिन्दगी बिता रही हो, सबसे बुरी बात तो यह है कि अपने बच्चों को भी उसी ढर्रे पर चला रही हो। बच्चों के भविष्य की सोचो। उनको बेहतर जिन्दगी जीने के लिए पढ़ने लिखने का मौका दो।

तुम लोगों को चाहिए कि प्रौढ़ पाठशालायें रोज

आओ। वहां केवल अक्षर ज्ञान ही नहीं कराया जाता। बहुत सारी बातें बताई जाती हैं, सिखाई जाती है। खेती बारी की, घर गृहस्थी की, बच्चों के स्वास्थ्य की, नए रोजी रोजगार की, हमारे नागरिक अधिकार क्या हैं, कर्त्तव्य क्या हैं, इन सारी बातों की जानकारी यहाँ मिलती है। चाहे जो उमर हो, पढ़ने और सीखने में शरम कैसी ?

पर यह सब तभी संभव है जब अनपढ़ होने का पर्दा उठाओ। अपने परिवार को छोटा रखो। अपने बच्चों को पढ़ने लिखने का मौका दो। फिर देखोगे कि जो बातें मैं आज तुम लोगों को करने के लिए समझा रही हूं, अपने स्वस्थ और अच्छे बच्चों पर गर्व करोगी। तब न तुम्हें कोई ठग सकेगा, न अंधेरे में रख सकेगा, न तुम्हारा अधिकार छीन सकेगा और न ही तुम किसी की मोहताज रहोगी।

इसलिए प्रतिज्ञा करो कि सब रोगों की एक जड़ निरक्षरता को अब न पनपने दोगी। खुद भी पढ़ोगी तथा अपने बच्चों को पढ़ाओगी। शिक्षा की रोशनी की लकीर तुम्हें तथा तुम्हारे परिवार को अंधेरे में रास्ता दिखायेगी।"

अनुराधा की बातों से सारी औरतें इतनी खुश हो गईं

कि सब खड़ी होकर बोली—"कराओ प्रतिज्ञा हम सब तैयार हैं।"

अनुराधा को लगा जैसे उसकी ही जिन्दगी में रोशनी की लकीर खिंच गई।

□□□

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110 002